रविवार, दिनाँक 20-10-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सभी सजनों को जय सीता राम जी।

सजनों आज कीर्तिक की मीटिंग है। मीटिंग के दिन सबने अपना ध्यानपूर्वक आत्म-निरीक्षण करना होता है कि चैत्र के यज्ञ से लेकर अभी तक आपने कितनी स्वाभाविक उन्नति की है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वार्थ से परमार्थ की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रति आपने क्या पुरुषार्थ दिखाया है। इस संदर्भ में सजनों याद रखो कि समयबद्ध जीवन लक्ष्य को पूरा करने हेतु सत्यता से आत्मनिरीक्षण करते हुए, आत्म-नियन्त्रण रखना होता है ताकि जो कमी चैत्र के यज्ञ से लेकर अब तक हुई उसे आत्मसुधार द्वारा पूरा कर फ़र्स्ट का नतीजा दिया जा सके। आप ऐसा करने में कामयाअ हो इस हेतु अब ध्यानपूर्वक भजन सुनोः-

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

आत्मपद दा रस्ता बता रहे ने, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।

मोह माया दी नींद विच घूक सोये, महाबीर जी आके जगा रहे ने।

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने।।

शास्त्र महाबीर दा रस्ता बताया ए, बली सांवले चरण दिखा रहे ने।

सांवले चरणां दे मालिक महाबीर जी, दर्शन सारियाँ भैणां नू करा रहे ने।।

किसे नू युक्ति देवन किसे नू उपदेश देवन, सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

जेहड़ी भैण महाबीर जी दा नाम ध्यावे, ओहनू मुक्ति दी पदवी दिवा रहे ने।

कलयुग ने है सब नू घबराया, महाबीर कलयुग नू आप हटा रहे ने।।

अग्गे सेवकां नू महाबीर जी भेजदे रहे, हुण चरणां दे मालिक आप आ गये ने।

सदके जावां सदके जावां महाबीर जी तों, जेहड़े सब दियां आशा पुजा रहे ने।।।

दासी चरणां तों बलिहार जावे, सानू भुलियां नू रस्ते ला रहे ने।

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

इस भजन को सुनने के पश्चात सजनों हमें यह समझना है कि हम किस कारणवश निरर्थक जीवनयापन करने का तरीका अपना बैठे हैं। फिर उस कारण को समेटकर अपने जीवन को सार्थक बनाने हेतु शास्त्र विहित सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों का अनुकरण करना है और इसमें कदापि कमजोर नहीं पड़ना। इस प्रकार अपना जीवन सुखमय व शान्तमय बनाना है। इस संदर्भ में याद रखना है कि जहाँ शान्ति होती है वहाँ सजन अपनी अन्तर्निहित शक्तियों को पहचान व जान सकता है व उसे प्रयोगात्मक ढँग से अपनाकर शक्तिशाली बन सकता है और निर्विकारितापूर्वक जीवन यापन करने में सक्षम बना रह सकता है। ऐसे जीवन यापन का अन्त परिणाम मोक्ष प्राप्ति होता है। अतः जो जीवन व्यतीत हो गया उसका रोना झुखना व उसको सोचना बन्द कर दो और इस आत्म-विश्वास में आ जाओ कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर हैं और वह ही साँवले चरणों के मालिक हैं। केवल वही हमें सुमार्ग के रास्ते पर दृढ़तापूर्वक बने रहने के योग्य बना सकते हैं। हमसे कोई पाप, कोई अधर्म न हो अपितु इसके स्थान पर स्थिरता से निरन्तर धर्मपथ पर बने रहो। निश्चित रूप से ऐसा करने में सक्षम बनने हेतु हमें पता होना चाहिये कि धर्म क्या है? - याद रखो निष्कामता ही धर्म है, अतः निष्काम भाव से व स्थिरता से हर क्षण धर्म पर डटे रहना है तभी हम जो भी करेंगे वह निश्चित रूप से सुकर्म ही करेंगे। सजनों यह सब बातें स्मृति में रखते हुए खुद पर आत्म-नियन्त्रण रखना है ताकि किसी भी कारण लोभ, मोह, लालच के वशीभूत होकर निष्काम-भाव से हम कदापि कमजोर न पड़ें। जानो यह कोई कठिन कार्य नहीं है अपितु संक्षिप्त सी क्रिया है। अतः इस क्रिया को करना आरम्भ कर दो और इस बात पर सतर्क बने रहो कि हम अपने जीवन के सजन बने और परमार्थ को प्राप्त कर लें। सजनों तब आपका आज का यहाँ आना सफल हो जायेगा।

इस सन्दर्भ में सजनों आपको आज के दिन निश्चय लेना चाहिये कि सुरत शब्द संग यानि अपने शौह के संग सदा बनी रहे। यह व्रत होना चाहिये कि अब मेरे मन में कभी कामुक भाव नहीं उठेगा यानि मैं सदा निष्काम अवस्था में डटा या डटी रहूँगी। जानो कि कामुक

भाव उठते ही हमारा ख़्याल संसार में लिप्त होना आरम्भ हो जाता है और इन्द्रिय-निग्रह हमारी पकड़ से छूट जाता है। तदुपरान्त हम इन्द्रियों के वशीभूत हो पाप कर्म कमाने लगते हैं। इसीलिये भजन में कहा भी गया हैः-

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने

अतः इस बात को गहनता/गम्भीरता से लेना है कि मैनें कदापि पापकर्म नहीं करना। ऐसा ही हो इसके लिए सतर्क रहना है कि मेरा ख़्याल अपने शौह के संग निरन्तर बना रहे। फिर जो शौह की आज्ञा हो उसी अनुसार मैं केवल वही करूँ। सजनों समझ लो कि यही परमार्थ में पतिव्रत धर्म है। इस धर्म को निभाना श्रेष्ठता का द्योतक है व यश-कीर्ति प्राप्त करने की बात है। आज के दिन प्रण रूप में यह निश्चय लो कि मैं अपनी सुरत को युक्तिसंगत हर क्षण 'आत्मा में जो परमात्मा है' उस संग साधे रखूँगाफ जानो ऐसा सुनिश्चित करना अमीरों के भी अमीर बनने की बात है। यहाँ पहुँचकर फिर 'काम' का तो कोई अर्थ ही नहीं रह जाता क्योंकि तब वह अमीरों का भी अमीर यानि दाता बन जाता है और दाता तो सदा सुकर्म ही करता है। अतः आज के दिन परमार्थ में पतिव्रता धर्म पर मजबूत रहने का संकल्प लेना ही लेना है क्योंकि सुरत स्त्री है। इसके बाद हमने हर क्षण इस निश्चय पर अटलता से बने रहना है। अब आगे सुनोः-

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

शाखः-

हम श्री राम नाम दे व्यापारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।

राम नाम कुल नगरी ओ सारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

जगमग जगमग जगमग जगमग, ओ - ओ - ओ - ओ - ओ।

हम श्री राम नाम दे व्यापारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

श्री राम रटन तुसां कर लवो, राम नाम दा खज़ाना भर लवो ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

राम नाम जगत हितकारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

श्री राम नाम दा घाटा न पाईं, श्री राम नाम दा नफा कमाईं ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

श्री राम जगत भण्डारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

श्री राम नाम नूं इक रस हो ध्याइयो, श्री राम नाम नाल मेल तुसां खाइयो।

एहो पदवी तुसां पाईयो एहो पदवी तुसां पाईयो ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

हम श्री राम नाम दे व्यापारी, हम श्री राम नाम दे व्यापारी।।

इस कीर्तन में सभी सजनों को यह शुभ सन्देश दिया गया है कि तत्क्षण धर्म-मर्यादित जीवन जीना आरम्भ कर दो। जैसा कि हम जानते ही हैं कि श्री रामचन्द्र जी महाराज ने कई कष्ट सहने के बावज़ूद भी मानव रूप में ऐसा कर दिखलाया पर उन्होंने धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा इसीलिये आज वह परमात्म नाम कहाते हैं। सजनों मानव रूप में यदि वह ऐसा कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते। आत्मज्ञान के रूप में जो ज्ञान व कुदरत प्रदत्त शक्तियाँ हैं, वह सबके लिये सर्व-सांझी यानि बराबर हैं। अतः हमने अपने निज-ज्ञान व शक्तियों को पहचानना है, केवल पहचानना ही नहीं अपितु जानना भी है। यहाँ ध्यान से समझो कि किसी चीज की पहचान होने पर यह मान तो लेते हैं कि यह अमुक वस्तु है पर उसको जानना भी आवश्यक होता है कि यह है तो कैसे है, इसकी गुणवत्ता क्या है? सजनों इसी प्रकार ही ईश्वर के विषय में भी होता है। ईश्वर को मानना और उसे जानना, दोनों बातों में बहुत बड़ा अन्तर है - ऐसा बोर्डों में लिखा हुआ है। मानने का अर्थ तो यह होता है कि किसी की कही हुई बात को मान लिया और जानना होता है प्रत्यक्ष साक्षात्कार करना। सजनों यहाँ मानने और जानने के फर्क को समझो। अतः कोई भी कुछ अच्छा कहे तो उसे मानो पर जो उसने कहा है उसकी वास्तविकता को जानना अति आवश्यक है। तभी तो उसे धार पाओगे और वैसा करना उचित समझोगे। जब तक जानते ही नहीं तब तक उसको धारण करने का क्या लाभ? यह कमजोरी इन्सान को ले डूबती है और उसे अन्यों के अधीन कर देती है। अतः आप अपनी मानसिक शक्ति का विवेकशीलता से प्रयोग करो ताकि आपको सत्य का ज्ञान हो सके कि वह बताने वाला ठीक कह रहा है या गलत? ऐसा कदापि न करो कि जो उसने कहा उसे आँख मून्दकर तुरन्त ही उसके मार्ग पर चल पड़ो क्योंकि परखकर ही सत्य को जानना होता है, समझ आई बात?

उदाहरण तौर पर सजनों जब भौतिक तौर पर आपको किसी भी व्यापार में नुक्सान हो जाता है यानि घाटा पड़ जाता है तो आप स्थिति पर पुनर्विचार करते हो न? यानि इस

बात पर विचार करते हो कि घाटा पड़ गया तो क्या बनेगा, घर की शान्ति निश्चित रूप से भंग हो जायेगी इत्यादि, इत्यादि। ठीक इसी प्रकार परमार्थ का भी चलता है। परमार्थ में घाटा पड़ता है तो चित्त की शान्ति भंग हो जाती है। जानो शान्ति का भंग होना मूढ़ता को प्राप्त होने की बात होती है क्योंकि शान्ति भंग होते ही इन्सान आत्म-विस्मृत हो जाता है। इस तरह अशांत अवस्था में आप सत्य का दर्शन करने में बिल्कुल अयोग्य हो जाते हो। पर सत्य का दर्शन समरस बना रहना चाहिये। सत्य का दर्शन किये बगैर कुछ भी अपनाना नहीं चाहिये। इसीलिये बार-बार कह रहे हैं कि विवेकी बनो। विवेकी बनने की विधि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में आपके पास है अतः हिम्मत दिखाओ।

श्री रघुनाथ जी अपने सुपुत्र श्री महाबीर जी को कह रहे हैं

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।

कोई विरला ओ बच जासी, जेहड़ा राम शरण जो आसी।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

महाबीर जी अपना बल प्रगट करो, भारत माता जी दे सिर तों भार हरो।

माता जी दे कष्ट निवारण करो, नाम तुहाडा तेजधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

राम नाम नूं हुन याद करो, जन्म अपने नूं आबाद करो।

सतवस्तु दा सजनों राज करो, ओ सबदा शहनशाली है।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

अत्यन्त नाम वल ध्यान धरो, जन्म अपना हुन आज़ाद करो।

सतवस्तु दा सजनों साज करो, ओहदी ताकत अजब निराली है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दी आज्ञा दा पालन करो, संकट टारी माता दा संकट दूर करो।

माता मारे आवाज़ां, ऊंदी विपता हरो, नाम आपदा हनुमान जी बलधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दे वचनां नूं पूरा करो, हो सपुत्र उस दी पीड़ा नूं दूर करो।

हटे अन्धेरा हुन चानणा ज़रूर करो, नाम आपदा न्यायकारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

यह कीर्तन कलियुगवासियों को जागृति में लाकर सत्य से परिचित कराने हेतु उत्कृष्ट शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। प्रभु के इन वचनों को समझते हुए यह जान लेना चाहिये कि मानव रूप में हम इस दुनियाँ में सदा रहने वाले नहीं हैं। योनियों के रूप में यह भिन्न-भिन्न रूप, हमारे कर्मानुसार, अलग-अलग क्रिया करने के निमित्त प्राप्त होते हैं। इस संदर्भ में अगर हमने अपनी सुरत को परमात्मा संग, जो जीवन दाता हैं, साध लिया तो निश्चित रूप से हम अमरता के प्रतीक बनने वाले हैं। फिर अमरता के प्रतीक बनकर अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाने वाले हैं। अगर ऐसा नहीं करते तो रोने-झुखने से आज़ादी नहीं पा सकते। इसके लिये हमारे लिये सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करना और उन्हीं के अनुसार जीवन यापन करना आवश्यक हो जाता है। इसके अतिरिक्त मृतलोक पर फतह पाने का हमारे पास कोई अन्य मार्ग नहीं है क्योंकि ए विध् ही हम आत्म-स्मृति में आकर खुद की यथार्थता को जान सकते हैं। फिर उस यथार्थता को मानते हुए तद्नुसार निष्कामता से जीवन जीना सुनिश्चित कर सकते हैं। ए विध् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से मुक्त रह ब्रह्म अवस्था में निरन्तर बने रह सकते हैं। सजनों जानो

कि जहाँ ब्रह्मसत्ता भरपूर है यानि ब्रह्म का भाव अन्तर्घट में स्थित है, वहाँ मानव आत्म-निर्भर रह इस जगत से निर्लिप्त रहते हुए सब कुछ करने के निमित्त समर्थ/तत्पर रहता है। तो इसमें क्या दिक्कत है, क्या कठिनाई है? - दिक्कत केवल अपने आप को समझाने की है। यकीन मानो यह जिन दिखावे की प्रवृत्तियों में हम ढल चुके हैं, उनसे ऊपर उठकर यथार्थता का प्रतीक यानि धर्मज्ञ बनने व सत्यनिष्ठा से धर्म-संगत निष्पाप जीवन जीने के काबिल बनने जैसी उत्तम बात है।

सो सजनों आज के दिन आत्म-नियन्त्रण रखते हुए आत्म-सुधार करो और अटल सुहागिन रहो। आपके जीवन में बिछुड़ने यानि वियोग का दिन कभी न आये - यह है भौतिकता से ऊपर उठकर अध्यात्मवाद को अपनाना। ऐसा सुनिश्चित करने में आप सब यानि बच्चे, आज की युवा पीढ़ी, प्रौढ़, हर आयु वर्ग के सजन समर्थ बने, उस हेतु, जैसा कि गत रविवार को भी कहा गया था, कविता सुमन नामक कार्यक्रम का शुभारम्भ हो रहा है जो कि बाल दिवस के रूप में मनाया जायेगा। इस कार्यक्रम को हर स्कूल में, चाहे वह कहीं भी स्थित है, कराना है। आप कितने स्कूलों में यह आयोजन कराने में सक्षम हो पाते हो, उस हेतु उतनी-उतनी कार्यक्रम से सम्बन्धित सामग्री यहाँ से लेकर जाना है ताकि कल से ही आप इस कार्य में जुट जाओ। जानो यह थोड़ा अपने समय का त्यागकर, आने वाली युवा-पीढ़ी के साथ-साथ कुल संसार के बच्चों के सुधार के निमित्त यानि उन्हे सदाचारिता के प्रतीक बनाने हेतु परोपकार कमाने की शुभ बात है। इस क्रिया में अपने संगी-साथियों को भी सम्मिलित करना है ताकि उन्हें भी यह सब समझ आये और जब कभी उनसे मिलाप हो तो स्वार्थ की क्रिया के स्थान पर परमार्थ की चर्चा होनी आरम्भ हो जाये। सजनों जानो कि यह शुभ काम एक प्रकार का परिवर्तन होगा जिससे हम अपने ख़्याल को अफुर अवस्था में रखते हुए नीति-संगत नाम-अक्षर चलाते हुए अपने हृदय को हर क्षण प्रकाशित अवस्था में साधे रख सकते हैं। सो इस लाभ को समझो कि यह लाभ अत्यन्त मूल्यवान है। साथ ही यह भी समझो कि इस लाभ से आपको कितना अधिक फायदा होने वाला है। अतः कर्मठ होकर इस क्रिया में सहयोग प्रदान करना है ताकि जो इसके पश्चात आगामी प्रोग्राम होना है, उसके प्रति आपके अन्दर अभी से ही उत्साहवर्द्धन हो जाये। सजनों यह आपकी विचारधारा का एक सकारात्मक परिवर्तन होगा। यह अपने सजन बनने की बात है और जो आत्मायें बच्चों के रूप में आ रही हैं उनको आत्म-स्मृति में रखने के प्रति थोड़ी मेहनत करना का साहस दिखाने की बात है।

आप अपने इस उद्देश्य में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।